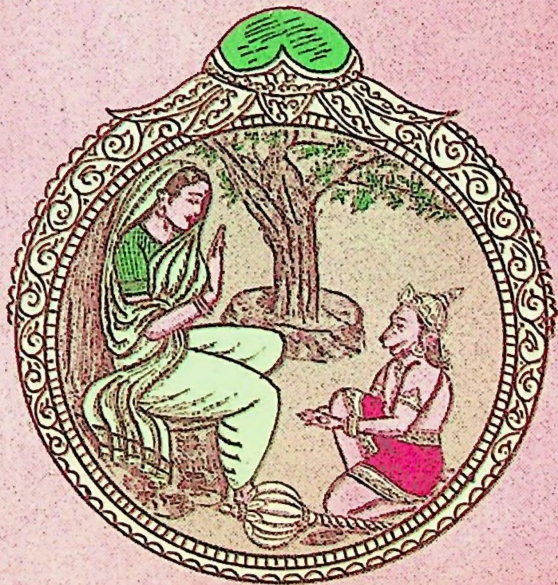


श्रीहनुमान—मूँदडी-तथा
मुद्रिका



॥ श्रीः ॥

श्रीहनुमान-मूंदडी-तथा

मुद्रिका ।

मास्टर रामसुखजी ब्राह्मणकृत.

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

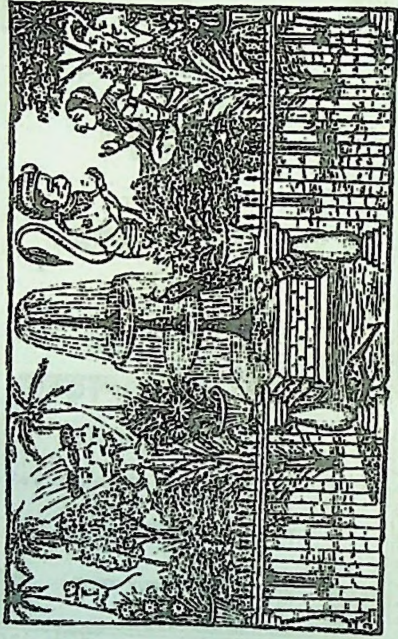
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

सन् १९९८ सम्वत् २०५५

मूल्य २ रुपये मात्र

॥ श्री हनुमते नमः ॥



॥ श्रीरामचंद्राय नमः ॥

अथ मूंदडी तथा मुद्रिका लिख्यते ।

सीता माताकी गोदीमें हनुमत डाली मूंदडी ।
वाहवाह सीताकी गोदीमें कपि छिटकाई मूंदडी ॥
टेक ॥ सुनके जामवन्तके वाक । हनुमत मारी
एक फदाक । हृदयध्यान रामको राख । समुंदर
कूद गये हनुमान । शीशपर राखी मूंदडी ॥१॥
सीता ० ॥ लंका फिरफिरके सब जोई । निगह
सीताकी नहीं होई । वहा तो बतलावेना कोई ।
जबतो जाय खडा पनघटपर बातें करती सुन्दरी
॥२॥ सीता ० ॥ बातें सुनके पतो लगायो । हनुमत
नवल बागमें आयो । सीता माताको दर्शन पायो ।
सीता झूले बिखाके माहि । कपि छिटकाई मूंदडी
॥३॥ सीता ० ॥ सीता देखतही पहिचानी । या है
रघुवरकी सहनाणी । यहांपर कौन जीनावर आणी ।
मनमें बहुत कल्पना करके। कंठ लगाई मूंदडी ॥
सीता ० ॥ जब तो बोले हनुमतबाणी । माता तू

बयूं चिन्ता आणी । रघुवर भेजी है सहनाणी ।
 मुझको भेजा श्रीरघुवीर । जाय तूं दे दे मूंदडी ॥५॥
 सीता० ॥ मैं तो जानु नहीं तोहि वीर । तूं तो है
 कोई छलगीर । मुझको किसबिध आवेधीर । तें
 तो करी राक्षसी माया । छलकी लायो मूंदडी ॥६॥
 सीता० ॥ मैं हूं रामचंद्रको पायक । मेरे राम सदा
 है सहायक । उनका नाम अति सुखदायक । मत-
 कर सोच फिकर तू माताया नहीं छलकी मूंदडी
 ॥७॥ सीता० ॥ बनचर देख सिया मुसकानी ।
 मुखसे बोले ऐसी बानी । तेरी छोटीसी जिन्दगानी ।
 किसबिध कूदगयो तु सागर । लंकमें लायो मूंदडी ८
 सीता० ॥ मैया छोटीसो मत जाण । मैं हूं बहुत
 अति बलवान । बल मोहि दियो श्रीभगवान ।
 रघुवर कृपा मोयपर कीनी । तब मैं लायो मूंदडी ॥
 ॥ ९ ॥ सीता० ॥ ऐसी सुनके सीता बात । धीरज
 अपने मनमें लात । इसको भेजा श्रीरघुनाथ ।
 मनमें बहुत खुशी होय । सीता पल पल निरखे

मूंदडी ॥ १० ॥ सीता० ॥ मैया भूखो भोजन पाऊं ।
 देओ हुकम तोड फल खाऊं । दरखत तोड तोड
 छिटकाऊं । अब मैं अपना बल दिखलाऊं । इस-
 विध लायो मूंदडी ॥ ११ ॥ सीता० ॥ कहवे सीता
 सुन हनुमान । यहाँ है निश्चर अति बलवान ।
 तोकूं मार गिरावे आन । फिर मैं झुरझुरके मर-
 जाऊं । यहीं रहजावे मूंदडी ॥ १२ ॥ सीता० ॥
 कहवे हनुमान सुन माता । मैं तो घरघर आग
 लगाता । जो मैं हुकम रामका पाता । तोमैं रामसे
 जाय मिलाता । संगमें रहतीमूंदडी ॥ १३ ॥ सी० ॥
 कहवे सीया बीर सिवाओ । जाओ बागमाहिं फल
 खाओ । हिरदे ध्यान रामकालाओ । जाओ दुष्टको
 मार भगाओ । वचन या कहती सुन्दरी ॥ १४ ॥
 सीता० ॥ आज्ञा सीताकी जब पाई । हनुमत नवल
 बागमें जाई । दरखत तोडतोड छिटकाई । माली
 जाय कही रावणने । कपि एक लायो मूंदडी १५ ॥
 सीता० ॥ बनचर एक बागमें आया । शंका तुमरी

वो नहीं लाया । दरखत तोड़ तोड़ छिटकाया ।
 ऐसा बनचर है बलवानकी ॥ वो एक लायो मूँदडी ॥
 ॥ १६ ॥ सीता० ॥ सुनके योद्धा सबही धाया ।
 सस्तर लेके बागमें आया । सन्मुख आकर युद्ध
 मचाया । वहाँ तो हुआ घोर संग्राम । हनुमत जीती
 मूँदडी ॥ १७ ॥ सीता० ॥ इनमें मेघनाद बल-
 कारी । हनुमत जीत्यो झगडो भारी । जिसने ब्रह्म-
 फांस गल डारी । लायो फांस बांध रावणके । झट
 दिखलाई मूँदडी ॥ १८ ॥ सीता० ॥ जबतो मारन
 उसको लागे । बस नहीं हनुमता आगे ।
 निशिचर देखदेख कर भागे । यहाँपर हरगिज नहीं
 मरनेका । पास सर जीवन मूँदडी ॥ १९ ॥ सीता० ॥
 मैं तो मोत बताऊं मेरी । लाओ तेल रुई तुम
 गहरी । अब मत रावण करतू देरी । पूँछको बांधके
 आग लगाओ । बचावे जल्दी मूँदडी ॥ २० ॥
 सीता० ॥ सब लंकाकी रुई मँगाई । उससे पूँछ
 बांध लपटाई । ऊपरसे फिर तेल गिराई । तब तो

तुरतही आग लगाई । यादकर लीनी मूंदडी ॥
 ॥ २१ ॥ सीता० ॥ पहले रावण सन्मुख जाई ॥
 वाकी डाढी मूँछ जलाई । पीछे सब लंकामें पूँछ
 फिराई ॥ लंका जाल दई हनुमान हृदयमें राखी
 मूंदडी ॥ २२ ॥ सीता० ॥ लंका फिरफिरके जलवाई ।
 घर एक बिभीषणका नाही ॥ बाकी सब घर आग
 लगाई । जब तो कारज किया हनुमान । समुद्रमें
 पूँछ बुझावे मूंदडी ॥ २३ ॥ सीता० ॥ हनुमत
 सुध लेकरके आया । आवत सभी कपि
 बतलाया । उनको सारा हाल सुनाया । सीता बैठी
 बागके माया । उसे दे आयो मूंदडी ॥ २४ ॥ सीता० ॥
 जब तो गये रघुबरके पास । उसकी खबर दिई है
 खास ॥ मेटी सीताकी सब त्रास । तोसभ नहीं कोई
 बलवान । सरावे रघुवर मूंदडी ॥ २५ ॥ सीता० ॥
 जो कोई ध्यान रामका लावे । मन चिन्ता फल वो
 सब पावे । रामचंद्रका जो गुण गावे । रघुवर पाप
 देवे सब खोये । ज्यो कोई नर गावे मूंदडी ॥ २६ ॥
 वाह वाह सीताकी गोदीमें, कपी छिटकाई मूंदडी ॥

लावणी दूसरी चालकी.

हुकम नहीं रघुवरको मुझे नहीं अभी चालतो
 लेकर साथ॥पवनपुत्र हनुमान नाम है दास रामको
 अंजनी मात ॥ कहे सीया हँसके ये बैन सुन मुझे
 अचम्भा आता है । छोटासा तेरा रूप बना और
 बातें बड़ी बनाता है ॥ ये सुनतेही हनुमान आपके
 तनुकु भोत बढ़ाया है । देख सीया तन कही धन
 दास रामका तु कहलाता है ॥यही जार रघुवरसे
 कहना लाज सीयाकी आपके हात । और विनय
 लछमनसे कहना ज्यो ज्यो तुम्हें समझाई बात ॥
 कहेना दुरवचन कहा था तुमकुं जिसका बदला
 पाई मैं । ये पोची रघुवरको निसानी देना ज्यो
 यहाँ पर लाई मैं ॥ नहीं भुलना सब कह देना
 ज्यो ज्यो तुझे समझाई मैं । तोडा धनुष कैई
 असुर बीडारे ध्यान धरूँ बैठी दिनरात ॥ पवन-
 पुत्र हनुमान नाम है दास रामको अंजनी मात॥
 करके विनय हनुमान कही माताभूख लगी मुजकुं

बैचैन ॥ पडा गिरा फल खावो बीनके ऐसे
 जानकी बोली बैन ॥ राक्षस जबर रखवाली करते
 कर तलासी यहां दिनरैन ॥ महाघोर ये प्रबलसे
 जोधा शस्त्र वदनमें बक्तर पैन । हुकम आपको
 पाऊं तो खाऊं फल तोड़ूं वृक्षोंके पात ॥ पवनपुत्र
 हनुमान नाम है दास रामको अंजनी मात ॥
 आज्ञा ले हनुमान बागकी पहिले बैठके देखी भार ।
 भूख लगी बैचैन ऊपाडे रोंख तोंड फल कीन
 अहार ॥ रोख ऊखाड फेंके पडे सागरमें जार
 लंकाके पार ॥ कितनेही राक्षस मरे बचे सो
 रावनसे जाके करी पुकार ॥ बाग कियो विध्वंस
 वानर एक आयो है छोटीसी जात ॥ पवनपुत्र
 हनुमान नाम है दास रामको अंजनी मात ॥

हनुमानजीका बागमें जाना, फल खाना,

वृक्ष उपाडना । धुन भैरवी चलतमें.

वानर आयो है बागमें सब बागको विध्वंस कर-
 दियो ॥ पकडने गयो उसेही मार बेहोस कर दियो ।
 बाग कुल ऊजाडा वो कैई राक्षसोंको पछाडावो ॥

रोख ऊपाड फेंक बागके सुन्नसागर भरदियो ॥

रावणका कहना कि, वानरको जल्दी पकड लाओ.

उस वानरको पकड यहां लावो ॥ करोड़ों संग ले
जोधा तुम्हारे जावो जल्दी लावो ॥ ये सुन चढे घोर
घन जोधा कही रावनने जल्दी जावो ॥ बांधके
कैद करो वा मार डालो फिर मुझकु खबर सुनावो ॥

राक्षस हमला करके पकडनेको चले.

चला असुरदल करके भोतबल कैद करन
हनुमानको ॥ हनुमान एक वृक्ष ऊपाड याद
किया वरदानको ॥ भागे सो रावनसे पुकारे लाखूं
खोगये जानकु ॥ होके खफा रावन बोला वानर
मीना कानकु ॥ जावो पुत्र तुम लावो शीघ्र कहा
मेघनाद बलवानकुं ॥ अबही धरूं मरोड सीस ।
काढूं खींच जवानकुं ॥

मेघनादका हनुमानजीकुं पकडने जाना.

इन्द्रजीत चला संग असुरदल अपार है ॥
वानर पकडो जाने न पावै कहते थुं पुकार है ॥

रथमें इंद्रजीत संग असहंकीसी भार है ॥
 मारई मार पुकारकर चमकती तलवार है ॥
 हनुमान एकवृक्ष ऊपाड मनमें कीयो विचार है ।
 रथ तोड इन्द्रजीतपै मुष्टक कीयो प्रहार है ॥
 संगके रक्षक सब मरे खायके पछार है ॥
 लाचार हो बचे सोभागे पीठ सब दीखार है ॥
 घबराया इन्द्रजीत देखे भागनेका वार है ॥
 ब्रह्मअस्त्र लीन्हा वो हातमें ऊठा रहा रहै ॥
 हनुमान कही अब तो इसके फसनेमेंही सार है ॥
 मारतेही सरफसे हनुमान ऊसमें आ रहै ॥
 सीधे आगे होलिये ज्यु चालता गिरफ्तार है ॥

हनुमानजीका रावणके पास आना (रावणका कहना)

पशु कौन है तू तेरा क्या है नाम ॥ किया बाग
 विध्वंस मेरा तमाम ॥ मेरा खोप तूने कुछभी खाया
 नहीं ॥ पशु पहिले लंकामें आया नहीं ॥ मुझे रामका
 हुकम हुवा नहीं ॥ नहीं रावन तू क्या है मैं मारू
 यहीं ॥ माता जगतकीसे तूने धोखा दिया ॥ तज

ज्ञान प्रारंभ तूं मोहका किया ॥ किस बलमें आयोरे
 बता भुजकु हाल ॥ गिरफदार मेरे पडा कैदकाल ॥
 वो भगवान कौन है बतातो सही ॥ दुसमन तेरी
 जान अब यहांही गई ॥ संग बानर हरीके चौरासी
 पदम ॥ बलमें हुं ऊनमें सबसे मैंही कम ॥ अभी
 कुछ न बिगडा मेरी मान तु ॥ मील लेके सीयाजी
 न खो जान तु ॥ शिव ब्रह्मा शेष रटत हैं सभी ॥
 इन्द्र कुबेर भुले ना कभी ॥ सुनरे पशु तूने यह
 क्या कहा ॥ देवकाल कैदीमें मेरे रहा ॥ धरती
 आकाश और पाताल है ॥ दुहाई मेरी फिरती
 ईकबाल है ॥ चलूं बांध ले रमलछमनके पास ॥
 अभी कुटुमसहित मैं कर दूंगा नास ॥ ये सुन-
 तेही सोला बभ्रुका हुवा ॥ लगे मारने सबकु घुस्सा
 हुवा ॥ कोई बाल नोचे कोई घुसुकी मार ॥ हनु-
 मतपे करे कोई थप्पडका वार ॥ हनुमत मगनमें
 होके जब थूं कही ॥ बता दूं मैं मेरी मोत तुमकु
 सही ॥ रुई मँगालो शहरसे अभी ॥ मेरी

पूंछके तुम लपेटो सबी ॥ तुम तेल सींचो लगा दो
 अगन ॥ जले तन मेरा देख हो तुम मगन ॥ जब
 रुई तेल लपटाई पूंछको बढाय ॥ एक असुरने
 वाके अग्नी दई लगाय ॥ लगी अग्नी देखी हनु
 अपनी पूंछ । जलाई पैले रावनकी दाढीरभूँछ ॥
 ऊछल कुदकर मेहलुफीरा ॥ जली लंका माची तीरा
 तीरा ॥ अगनी पवनसे हुई है कराल ॥ असुर नारि
 रोवे दे रावनकुं गाल ॥ खंभतडके कंचन मानक
 जडा ॥ मले हात रावन पसतावे खडाखडा ॥ होनी
 हाय बडी बलवान है ॥ जले मंदर मेघनाद हैरान
 है ॥ रोवे सुलोचना अरु मंदोदरी ॥ पीया हाय
 सुसरा बुरी तू करी ॥ जलाके लंका आये समन्द-
 रके पास ॥ जडित कंचन लंकाका पलमें कर नास ॥
 विनय कीई समन्दरने दूरसे ॥ कहां पूंछ ठंडी
 हील्लू रसे ॥ हुई पूंछ ठंडी सब पीर मीटगई ॥
 मिलूं मातासे हनुमत थुं दिलमें कही ॥

लंकाको जलाके हनुमानजीका जानकीजीके पास जाना.

सागरसे चले हनुमानजी पूंछ बुझाके ॥ बैठी थी जानकी मात मीले वहां आके ॥ करके विनय कहो मा देखी मेरी अकल ॥ कृपा रामकी मुझमें किया कैसा बल ॥ गई दुष्ट रावनकी सबी ये लंका जल ॥ नहीं किसीके साथ करेगा अब ये छल ॥ अब जाऊं रामलछमनकुं लाऊं छटाकै ॥ सागरसे चले हनुमानजी० ॥ धरो धीर रघुवरको यहां लाताहूं ॥ आया भुझे दो आप अभी मैं जाता हूं ॥ खबर सुना संग ऊनकूं ले आता हूं ॥ होवे दुष्टका नास यही चाहता हूं ॥ खबर खुसीकी अभी सुनाऊं जाके ॥ सागरके चले हनुमानजी पूंछबुझाके ॥ हुए खुसी बर सीयाजी ये फरमाया ॥ तुम मरो किसीसे नहीं अमर हो काया ॥ धन्य र पवनसुत अंजनीका जाया ॥ तु रामकाज करनेके कारण आया ॥ मैं दास चरनकी थुं कहना सरनाके ॥ सागरसे चले हनुमान० ॥ बिदा किया हनुमानकुं

युं समझाके॥कीज्यो विनयरघुवरसे सीस निवाके॥
हनुमान चले चरणोंमें सीस निवाके ॥ सुनी गर-
जना राकस डरे पस्ताके॥हनुमान चले युं मातासे
बतलाके ॥ सागरसे चले हनुमानजी पूछ बुझाके ॥

हनुमानजीका रामचन्द्रजीके पास जाना, लंका जलाना
तथा जानकीजीकी खबर ले जाना.

कूद समंदर कपी चले हैं करके खाक सब
लंकाकी ॥ जै जै जै रघुवीर फेर जै बोलो हनुमत
बंकाकी ॥ जांबवान् अंगदसे बोले हनुमानजी
आके यूं॥राम कृपासु लाया सिया सुद नहीं कुछ
दिलमें संकाकी ॥ देख कपीकूं खुसी हुये सब आ-
पसमें बतलाके यूं ॥ हनुमान अंगद जांबवान् नल
अरज करी सरनाके यूं ॥ कृपा रामकी हनु सिया-
सुद लाया नहीं कुछ संकाकी ॥ जै जै जै रघुवीर
फेर जै बोलो हनुमत बंकाकी ॥ श्रीबजरंगबलीकी
जै फेर श्रीबजरंगबलीकी जै ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

- १) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.
- २) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.
- ३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)
- ४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)



मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई-४०० ००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

